



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पश्चिमी राजस्थान में पाये जाने वाले ऊंट

राम सिंह

सहायक आचार्य (भूगोल)

विद्याश्रम कालेज,

शिकारगढ़ राड़, उचियारड़ा, जोधपुर।

पश्चिमी राजस्थान में पाए जाने वाले ऊंट (बुमस) राजस्थान की प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों में से एक हैं। यहाँ प्राचीन समय से ही ऊंट को राजस्थान की अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। ऊंट को राजस्थान का जहाज कहा जाता है क्योंकि यहाँ के जलवायु को सहन करने की अद्वितीय क्षमता वाला होता है। ऊंट राजस्थान के रेगिस्तानी मार्गों पर सवारी के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। ऊंट का चरित्रवादी और धैर्यवान स्वभाव है, जो इसे इस क्षेत्र में जीवन जीने के लिए उपयुक्त बनाता है। इसके अत्यधिक संपत्तिमान दूध, माँस, और कम कुछ खाद्य सामग्री के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

संकेताक्षर : मरवाड़ी ऊंट, जैसलमेरी ऊंट, कच्छी ऊंट, परिवहन का साधन, खुदाई का साथी, रोजगार का स्रोत, खेती का सहारा, पर्यावरण संरक्षा, दूध और माँस का स्रोत, पशु खुजली, अन्य त्वचा संबंधी बीमारियाँ, खानपान संबंधी बीमारियाँ, विषाणु संक्रमण, जनसंख्या संबंधी बीमारियाँ, आधात्मिक बीमारियाँ, विषाणु संक्रमण, गर्भाशय संक्रमण, प्रतिरक्षा बाधाएँ, तापमान, उपयुक्त चारा, पानी की कमी, परिस्थितिकी विशेषताएँ, भूमिका परिवर्तन, गरजनीयता का अधिक होना, पर्यावरणीय प्रभाव, जल संकट, फसल उत्पादन, जल, फसल उत्पादन, स्थानीय संसाधनों का कम होना, पशुपालन योजनाएँ, चिकित्सा सुविधाएँ, फसल संरक्षण, पशुपालन की शिक्षा, पशुओं के विकास कार्यक्रम, संरचनात्मक विकास साक्षात्कार और जागरूकता कार्यक्रम।

प्रस्तावना : राजस्थानी ऊंट को काची कहा जाता है, जिसका अर्थ है 'ckilh'। यह ऊंट पारंपरिक रूप से राजस्थानी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। ऊंट के पास एक अद्वितीय पारंपरिक वस्त्र धारण प्रणाली होती है, जिसमें परंपरागत रंगीन वस्त्रों का उपयोग किया जाता है। इससे न केवल ऊंटों की देखभाल होती है, बल्कि स्थानीय बुनकरों को भी रोजगार का अवसर प्राप्त होता है। ऊंट का योगदान राजस्थान की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण है। यह पर्याप्त जल की कमी के माहौल में भी रह सकता है, जिससे कृषि का उत्पादन संभव होता है। इसके अलावा, ऊंट के दूध और माँस का निर्यात भी राजस्थान की अर्थव्यवस्था को समृद्ध करता है। समाप्ति में, ऊंट राजस्थान की सांस्कृतिक और आर्थिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो इस क्षेत्र के लोगों के जीवन में गहराई और विविधता लाता है।

राजस्थान में प्रमुख ऊंट की नस्लें –

राजस्थान में प्रमुख ऊंट की नस्लें विभिन्न गुणस्तर और उपयोगिता के आधार पर विभाजित की जा सकती हैं। यहां कुछ प्रमुख ऊंट की नस्लों का वर्णन है—

- 1. मरवाड़ी ऊंट**—यह नस्ल राजस्थान का प्रमुख ऊंट है और इसकी विशेषता शक्तिशाली शरीर, अच्छी उपजाऊता, और अच्छी स्वास्थ्य है। इसका रंग सफेद, सफेद-काले या गुलाबी होता है।
- 2. जैसलमेरी ऊंट**— यह ऊंट जैसलमेर क्षेत्र से प्राप्त होता है और इसका विशेषता स्थानीय जलवायु और परिस्थितियों के अनुकूल होने के कारण उसकी प्रजाति में बदलाव हो सकती है।

3. कच्ची ऊंट— यह नस्ल भी राजस्थान में पाई जाती है और इसकी विशेषता उसकी बड़ी आंखें और अच्छी गायन क्षमता होती है। यह बड़ी संख्या में मात्रा में पाई जाती है।



इन ऊंटों का उपयोग गाड़ी खींचने और पर्यटन में किया जाता है, जैसे कि थार डेजर्ट सफारी में। ये ऊंट राजस्थानी संस्कृति और आधुनिक ग्रामीण जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

पश्चिमी राजस्थान में ऊंट की उपयोगिता

पश्चिमी राजस्थान एक सूखे क्षेत्र है जहां जल की कमी, तेज धूप, और अवसादीन जलवायु के कारण कृषि करना अत्यंत कठिन होता है। इस प्रकार, पश्चिमी राजस्थान में ऊंट का महत्व बहुत अधिक होता है, क्योंकि यह इस क्षेत्र के लोगों के लिए गहन परंपरागत और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है।

- 1. परिवहन का साधन :-** ऊंट राजस्थान में परिवहन का प्रमुख साधन है, खासतौर पर रेगिस्तानी क्षेत्रों में। इसकी सहायता से बाजार तक खेती की उत्पादों को पहुंचाया जाता है, जिससे किसानों को अधिक मूल्य मिलता है।
- 2. खुदाई का साथी :-** ऊंट की अत्यधिक संचालनशीलता और धैर्य के कारण, यह खुदाई में भी सहायक होता है। इसकी सहायता से अद्भुत गहने, उपयोगी पत्थर, और अन्य खनिज खोदे जा सकते हैं।
- 3. खेती का सहारा :-** ऊंट खेती में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह खेती के लिए हल खोदने, बीज बोने, और कृषि के अन्य कार्यों में सहायक होता है।
- 4. रोजगार का स्रोत :-** ऊंट पालन का व्यापक स्तर पश्चिमी राजस्थान में रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इससे कई लोग अपना रोजगार प्राप्त करते हैं, जैसे कि ऊंट पालक, ऊंट चरवाहा, और ऊंट परिचारक।
- 5. दूध और मांस का स्रोत :-** ऊंट का दूध और मांस राजस्थान में मुख्य आहार हैं। इससे लोगों को मात्रा में पोषण प्राप्त होता है, जो उनके स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है।



6. पर्यावरण संरक्षा :- ऊंट राजस्थान के बेहद संवेदनशील पर्यावरण में जीवन जीने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसकी सहायता से पारंपरिक पशुपालन प्रथाओं को बचाया जा सकता है और अनुकूलित जलवायु के लिए उपाय ढूंढे जा सकते हैं। इस प्रकार, पश्चिमी राजस्थान में ऊंट का महत्व विशेष रूप से उसकी सांस्कृतिक, आर्थिक, और पर्यावरणीय महत्व के कारण होता है।

समर्थन

सरकार और गैर-सरकारी संगठनों ने ऊंट पालन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए हैं, जो किसानों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करते हैं।

इन सभी कारणों से, ऊंट पालन पश्चिमी राजस्थान में एक महत्वपूर्ण गतिविधि है जो लोगों को आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक रूप से समृद्धि प्रदान करती है।

पश्चिमी राजस्थान में पाये जाने वाले पशुधन को अनेक प्रकार की बीमारियों का सामना करना पड़ता है, जो किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती हो सकती है। इन बीमारियों का पता लगाना, उनके लक्षणों को पहचानना, और उनका सही इलाज करना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि पशुओं की सेहत को सुनिश्चित किया जा सके और किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। यहाँ पर पश्चिमी राजस्थान में पाये जाने वाले पशुधन को होने वाली कुछ मुख्य बीमारियों के बारे में एक विस्तृत लेख दिया जा रहा है—

1. पशु खुजली :- यह बीमारी पशुओं के कंधों, खाल, और गरदन पर चकत्ते के रूप में प्रकट होती है। इसके लक्षणों में खुजली, खाल की लालिमा, और छाले होते हैं। इसका इलाज प्रतिदिन विशेष दवाओं और कीटनाशकों का उपयोग करके किया जाता है।

2. अन्य त्वचा संबंधी बीमारिया :- ऊंट में मांसपेशियों के संक्रमण, पशु गरदन (Goitre), और डेंगी बुखार जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं। इन बीमारियों के इलाज के लिए वेटेनरी सलाह लेना महत्वपूर्ण है।

3. खानपान संबंधी बीमारिया:- पशुओं को पेट गैस, बारी-बारी खाने की बीमारी, और पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इन बीमारियों का इलाज प्रतिदिन का देखभाल, स्वस्थ आहार, और चिकित्सा की सलाह के अनुसार किया जाता है।

4. विषाणु संक्रमण:- पशुओं को विभिन्न प्रकार के विषाणु संक्रमण हो सकते हैं, जैसे कि मास्टाइटिस (मस्तिष्क में संक्रमण), जूतांड (हड्डियों में संक्रमण), और आवश्यकता के बीना अंतिम स्तर के बीमारियाँ। इन बीमारियों का प्रबंधन और इलाज विशेषज्ञ वेटेनरियन के साथ समन्वय में किया जाता है।

5. जनसंख्या संबंधी बीमारिया:- पशुओं की बारिक आंतों की समस्याएं, अत्यधिक गाँठों का विकास, और पश्चिमी राजस्थान में पाये जाने वाले पशुधन को होने वाली बीमारियाँ समृद्ध और विविध होती हैं। इन बीमारियों का सही इलाज न केवल पशुओं की सेहत को सुनिश्चित करता है, बल्कि किसानों को भी आर्थिक नुकसान से बचाता है। यहाँ कुछ और प्रमुख पशुधन बीमारियाँ हैं

- 6. आधात्मिक बीमारियाँ:**—पशुओं में मस्तिष्क, हृदय, और फेफड़ों की समस्याएं हो सकती हैं। ये समस्याएं आमतौर पर खानपान या वातावरणिक कारकों के कारण होती हैं। इनका इलाज चिकित्सक की सलाह और दवाओं के साथ किया जाता है।
- 7. जनसंख्या संबंधी बीमारियाँ :**— पशुओं की जनसंख्या संबंधी समस्याएं जैसे कि अत्यधिक जनसंख्या, भ्रष्टाचार, और उपयोग में बढ़ोतरी इनमें शामिल होती हैं। इन समस्याओं का समाधान सार्वजनिक स्थानीय प्रशासन के साथ सहयोग करके किया जा सकता है।
- 8. विषाणु संक्रमण:**— पशुओं को विभिन्न प्रकार के विषाणु संक्रमण हो सकते हैं, जैसे कि मास्टाइटिस, जूतांड, और क्लोस्ट्रिडियम संक्रमण। इन संक्रमणों का इलाज विशेषज्ञ वेटेनरी सलाह के अनुसार किया जाता है।
- 9. गर्भाशय संक्रमण:**— यह बीमारी गर्भाशय के संक्रमण के कारण होती है और पशुओं में बारी-बारी जन्म, गर्भपात, और असंगठित गर्भावस्था की समस्याएं पैदा कर सकती हैं। इसका निदान और इलाज चिकित्सक द्वारा किया जाता है।
- 10. प्रतिरक्षा बाधाएँ** — कुछ पशुओं को अपने शारीरिक रोगों के लिए प्रतिरक्षा बाधाएँ होती हैं, जैसे कि अविश्वसनीय वजन कमी, जन्मांतर, और अधिक संपर्क। इन बाधाओं का समाधान करने के लिए व्यापक प्रतिरक्षा कार्यक्रम आयोजित किये जा सकते हैं।
- 11. अन्य बीमारियाँ :**— पशुओं को छोटे और बड़े आंतों के रोग, गर्भवती महिलाओं के संक्रमण, और प्रतिरक्षा कमजोरी जैसी अन्य बीमारियाँ भी हो सकती हैं। इनका इलाज और प्रबंधन वेटेनरी सलाह के अनुसार किया जाता है।

पश्चिमी राजस्थान में पाये जाने वाले पशुधन की बीमारियों का प्रबंधन करना किसानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सही समय पर बीमारियों का पता लगाना, उनके इलाज करना, और सजीव जीवन का संचालन करना उत्तम पशु स्वास्थ्य की गारंटी है। इससे न केवल पशुओं की सेहत सुनिश्चित होती है, बल्कि किसानों का भी आर्थिक और सामाजिक उत्थान होता है।

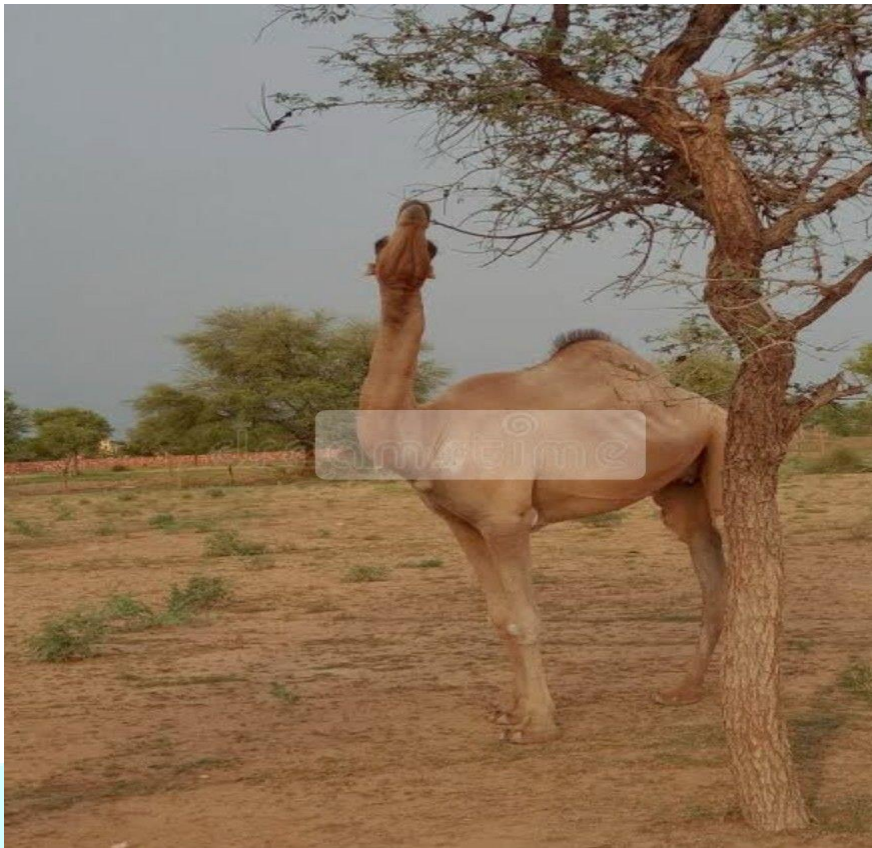
जलवायु और वातावरण —

पश्चिमी राजस्थान में पाये जाने वाले पशुधन को जलवायु और वातावरण के विभिन्न प्रकारों का सीधा प्रभाव पड़ता है, जो उनके जीवन और स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। यहाँ हम इस प्रभाव को कुछ मुख्य कारणों के साथ विस्तार से विचार करेंगे—

- 1. तापमान:**—पश्चिमी राजस्थान का तापमान उत्तम नहीं होता है। गर्मियों में बहुत उच्च तापमान और गर्म हवा पशुओं के शारीरिक संरचना और संचालन को प्रभावित कर सकता है, जिससे उन्हें जलन, थकान, और गर्मी की समस्याएं हो सकती हैं। साथ ही, जल्दी फटने वाले बच्चों के लिए भी यह अस्वाभाविक है।
- 2. उपयुक्त चारा:**— पश्चिमी राजस्थान के सूखे और अर्ध-अरिद क्षेत्रों में अच्छी गुणवत्ता की चारा उपलब्ध नहीं होती है। यहाँ पर पाए जाने वाले घास, फसलें और अन्य चारा स्रोतों की कमी पशुओं के पोषण को प्रभावित कर सकती है और उनके स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती है।



3. **पानी की कमी:-** पश्चिमी राजस्थान में पानी की कमी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। गर्मियों में पशुओं को पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उनकी प्यास नहीं बुझती है और वे उन्हें खोजने के लिए दूसरे स्थानों तक चले जाते हैं, जिससे उनका उत्पादन भी प्रभावित होता है।
4. **परिस्थितिकी विशेषताएँ :-** पश्चिमी राजस्थान की परिस्थितियाँ उन्हें धूल, रेत, और वायुमंडल में अधिक गरमी का सामना कराती है, जो उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। उच्च तापमान, थकान, और गरम हवा के कारण पशुओं को सुनामी, लू, और वायुमंडलीय बदलाव की विशेष संरचना की
5. **भूमिका परिवर्तन :-** पश्चिमी राजस्थान में भूमिका परिवर्तन के कारण भी पशुधन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। वायुमंडलीय परिवर्तन और वन्य जीवों के प्रकोप के कारण पशुओं के लिए भोजन की कमी होती है और उनकी स्थानीय संवेदनशीलता पर प्रभाव पड़ता है।
6. **गरजनीयता का अधिक होना:-** पश्चिमी राजस्थान के अर्ध-अरिद और सूखे क्षेत्रों में पशुओं की गरजनीयता की स्थिति प्रबल होती है। इससे पशुओं का शारीरिक संरचना और आहार-विहार पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
7. **पर्यावरणीय प्रभाव:-** पर्यावरणीय प्रभाव भी पशुओं के जीवन पर असर डालते हैं। वन्य जीवों के संग्रहण स्थलों के कम होने से पशुओं के लिए खाने की कमी होती है और उनके लिए यातायात की समस्याएं उत्पन्न होती हैं।



8. जल संकट:— पश्चिमी राजस्थान में पानी की कमी अक्सर पशुओं को प्रभावित करती है। यह उन्हें प्यास, पोषण की कमी और संक्रमणों की आशंका का सामना करवाती है।

9. फसल उत्पादन:— पश्चिमी राजस्थान के जलवायु और भूमि की विशेषताओं के कारण, यहां की फसल उत्पादन में अधिक संकट होते हैं। यह पशुओं के लिए आहार के स्रोतों को और अधिक संकटित करता है।

10. स्थानीय संसाधनों का कम होना:— पश्चिमी राजस्थान में चारा और पानी की कमी के कारण स्थानीय संसाधनों का भी कमी होता है, जिससे पशुओं के लिए आहार की कमी होती है और उन्हें विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

पश्चिमी राजस्थान की कड़ी जलवायु और वातावरणीय स्थिति पशुओं के लिए बड़ी चुनौतियों का सामना कराती है। इसे सही रूप से प्रबंधित किया जाना चाहिए ताकि पशुओं की अच्छी सेहत और उत्पादनता को सुनिश्चित किया जा सके। इसके लिए विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर कड़ी मेहनत की जानी चाहिए।

पश्चिमी राजस्थान में पशुधन के विकास और संरक्षण के लिए सरकार ने कई योजनाएं –

पश्चिमी राजस्थान में पशुधन के विकास और संरक्षण के लिए सरकार ने कई योजनाएं चलाई हैं। ये योजनाएं पशुपालन के संरक्षण, पशुओं की चिकित्सा सुविधाओं का विकास, पशुओं के पोषण के स्रोतों को मजबूत करने, और पशुओं के जीवन की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने पर केंद्रित हैं।

1. पशुपालन योजनाएं:— गौवंश विकास योजनाएँ इस योजना के तहत, गायों के पालन की प्रोत्साहना की जाती है और उनके लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध की जाती हैं। — ऊंट पालन योजना:— यह योजना ऊंट पालन को बढ़ावा देती है और ऊंट की जातियों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए सहायता प्रदान करती है।

2. चिकित्सा सुविधाएं:— पशु चिकित्सा केंद्रों सरकार ने पशुओं के लिए चिकित्सा सुविधाओं के लिए केंद्र स्थापित किए हैं, जहां पशुओं को चिकित्सीय सहायता प्रदान की जाती है।

3. फसल संरक्षण:— चारा विकास योजनाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में चारा विकास के लिए सब्सिडी प्रदान की जाती है, जिससे पशुओं को पोषण के लिए उचित आहार उपलब्ध होता है।

4. पशुपालन की शिक्षा:— पशुपालन शिक्षा योजनाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन के क्षेत्र में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए योजनाएं चलाई जाती हैं। यह पशुपालन के तकनीकी और प्रबंधन तंत्र को समझने में सहायक होती है।

5. **पशुओं का बीमा:**— पशुधन बीमा योजना सरकार ने पशुओं के बीमा की योजनाएं चलाई हैं, जिससे किसानों को अप्रत्याशित पशु मौत के नुकसान से सुरक्षा प्राप्त होती है।
 6. **पशुओं के विकास कार्यक्रम:**— पशुओं का विकास कार्यक्रम इसके तहत पशुओं के विकास को बढ़ावा दिया जाता है, उनकी जेनेटिक संरचना को मजबूत किया जाता है, और उनके उत्पादन को बढ़ाने के लिए सहायता प्रदान की जाती है।
 7. **संरचनात्मक विकास :**— पशुधन संरचनात्मक विकास योजनाएं इन योजनाओं के तहत पशुओं के लिए सुविधाएं और संरचनात्मक विकास कार्य किए जाते हैं, जैसे कि पशुशालाओं की विकास, पशुओं के लिए आवास, और खुले
 8. **पशुधन संगठनों का समर्थन** सरकार पशुपालकों के संगठनों का समर्थन करती है ताकि उन्हें विभिन्न सेवाएं और सुविधाएं प्रदान की जा सकें, जैसे कि बाजार एक्सेस, पशु चिकित्सा सेवाएं, और प्रशिक्षण कार्यक्रम।
 9. **पशु आधारित उत्पादों का विकास:**— सरकार पशुओं के आधारित उत्पादों के विकास को प्रोत्साहित करती है, जैसे कि दूध, गाय के गोबर से उत्पन्न उर्वरक, और ऊंट के लिए रेशम।
 10. **प्रवर्धन योजनाएं :**— सरकार पशुओं के आवास, खाद्य स्रोत, और पानी की सुविधा को प्रबल करने के लिए प्रवर्धन योजनाएं चलाती है। इससे पशुओं का स्थाई और संवृद्ध विकास होता है।
 11. **कृषि-पशुपालन क्रियाकलाप** — सरकार कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में एकीकृत कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करती है, जैसे कि चारा उत्पादन, पशुओं के लिए प्रकृति से उत्पन्न उपज, और फसलों के साथ पशुपालन।
 12. **संगठनात्मक बदलाव** — सरकार संगठनात्मक बदलाव को प्रोत्साहित करती है, जैसे कि गायों के समूहों में समर्थन की प्रदाना, पशुओं के संगठन और प्रबंधन, और किसानों के पशुपालन के लिए सहायता।
 13. **साक्षात्कार और जागरूकता कार्यक्रम** — सरकार जागरूकता कार्यक्रमों और पशुपालन संबंधित साक्षात्कारों का आयोजन करती है, जिससे किसानों को नई तकनीकियों और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी मिल सके।
- इन योजनाओं के माध्यम से, पश्चिमी राजस्थान की सरकार पशुधन के संरक्षण, विकास, और प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए कई पहल कर रही है। ये योजनाएं पशुपालकों को सहायता प्रदान करती हैं और पशुओं के जीवन को बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- निष्कर्ष :**— पश्चिमी राजस्थान में पाए जाने वाले ऊंट एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेषतः बाड़मेर, जैसलमेर, बारमेर, और जोधपुर जैसे जिलों में। इस क्षेत्र में मुख्यतः तीन प्रमुख ऊंट नस्लें पाई जाती हैं मरवाड़ी, जैसलमेरी, और कच्छी। मरवाड़ी ऊंट इस क्षेत्र का सबसे प्रमुख ऊंट है, जिसकी विशेषता उसकी शक्तिशाली शरीर, अच्छी उपजाऊता, और प्रतिरोगी रहने की क्षमता है। इसके आकार मजबूत और स्थूल होते हैं, जो इसे ठंड, गर्मी और कठोर परिस्थितियों में भी जीवित रहने की क्षमता प्रदान करता है। जैसलमेरी ऊंट जैसलमेर और पास के क्षेत्रों से प्राप्त होता है, जो सूखे की कठिनाइयों में भी अपनी जीवन-शैली को संभाल सकता है। इसके लिए विशेष तरीके से उपयुक्त आंतरिक रक्षा प्रणाली विकसित की गई है। कच्छी ऊंट प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में पाया जाता है और इसकी विशेषता बड़ी आंखें, अच्छी गायन क्षमता और विशेष प्रकार की गड़बड़ी रहती है। यह ऊंट सामाजिक और आर्थिक महत्वपूर्ण है और स्थानीय विवाह समारोहों में भी उपयोग होता है। ये ऊंट पश्चिमी राजस्थान के सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो वहाँ के लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनका व्यापक उपयोग और समर्थन इस क्षेत्र की जीवन प्रणाली को सुदृढ़ करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:—

1. राजस्थान पशुपालन विभाग की वेबसाइट
2. भारत सरकार की पशुपालन विभाग की वेबसाइट
3. विकिपीडिया
4. राजस्थान अध्ययन की पुस्तक
5. राजस्थान का आर्थिक परिदृश्य के. कृष्ण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर
6. राजस्थान के अर्थव्यवस्था के. एल. गोयल, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी प्रकाशन जयपुर
7. राजस्थान पशुपालन अधीनस्थ बोर्ड राजस्थान सरकार जयपुर
8. केंद्रीय ऊंट अनुसंधान केंद्र जोहडबीड बीकानेर

